सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, मई-जून, 2007

सच्ची प्रार्थना

हमारी दौड़ परमेश्वर की तरफ या उनसे दूर?

पढ़िए - (एज्रा ५:१-१७, ६:१-१३) (और उन्होंने हमें इस प्रकार उत्तर दिया, 'हम तो स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर के दास हैं, और उसी मंदिर का पुनर्निर्माण कर रहे हैं जो वर्षो पूर्व बनाया गया था। उसे इस्राएल के एक महान राजा ने बनवाकर तैयार किया था। परन्तु जब हमारे पूर्वजों ने स्वर्ग के परमेश्वर को क्रोध दिलाया तो उसने उनको बेबीलोन के कसदी राजा नबूकदनेस्सर के अधिकार में कर दिया, जिसने इस भवन को नष्ट कर दिया और जो लोगों को निर्वासित करके बेबीलोन ले गया।) एज्रा (१५:११, १२)

परमेश्वर के मन्दिर का पुनर्निर्माण प्रारंभ हुआ। उस काम को प्रारंभ करने वाले लोग, अपनी गलतियों को कबूल कर पाये। जब हम अपने बैरियों के सामने जायें, तो अपनी गलतियों को मान लेना, अच्छी बात है। हमारी सोच का हर एक पहलू तथा अन्तरात्मा में गहराइयों तक पहुँचने वाली गलती का एहसास, उत्तम है। इन लोगों ने मान लिया कि उनके पूर्वजों ने परमेश्वर को क्रोध दिलाया है। हमें अपने माता-पिता के पापों को मान लेना चाहिए। कई बार अपने बच्चों की गलतियों को भी मान लेना चाहिए। तब, उनके लिए प्रार्थना करें। परमेश्वर ऐसी प्रार्थना स्वीकार करते हैं।

विलापगीत (२:१४), 'तेरे नबियों ने तेरे लिए मिथ्या और मूर्खतापूर्ण दर्शन देखे हैं; तेरा अधर्म उन्होंने प्रकट नहीं किया, नहीं तो तू बँधुवायी में न जाती। परन्तु उन्होंने तेरे लिए झूठी और भ्रामक नबूवतें की हैं।' यरूशलेम के विनाश का मुख्य

पृष्ठ २ पर..सच्ची प्रार्थना..

आत्मिक उन्नति केलिए देखना न भूलें

"परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह ६:३० बजे

उत्पत्ति १६ वां अध्याय

अब्राम मिस्र देश चला गया। और वापस लौटते समय अपने साथ मिस्र का एक टुकड़ा लाया। हम अपनी विश्वास हीनता के लिए भले ही पश्चात्ताप करें, फिर भी हम अपने साथ कुछ ले आते है। सारै के घर में मिस्री स्त्री! सारै में पर्याप्त विश्वास नही था। जब हाजिरा गर्भवती हुई, तो तुरन्त उस में घमण्ड आ गया। वह सारै को तुच्छ दृष्टि से देखने लगी। सारै जो घर की स्वामिनी है, उसने कहा, 'यह क्या हो रहा है? घर में गड़बड़ी है।' सारै ने उसके साथ कठोरता से व्यवहार किया। वह दासी स्त्री वहाँ से भाग गई। क्योंकि वह डाँट खाना या ठीक किया जाना, नही चाहती थी। यही रास्ता है जो कई लोग अपनाने लगते है। परमेश्वर के अधीन होने के बजाय कई लोग उनसे भाग रहें है। यह स्त्री जंगल में भाग गयी।

उत्पत्ति १६:८, '... तू कहाँ से आ रही है और कहाँ जा रही है?' एक दोषी अन्तरात्मा हम से यह प्रश्न पूछती है, 'तुम कहाँ से आ रहे हो?' हम कहाँ से आ रहे है, यह कहने के लिए हम में से कुछ लोग डरते है। स्वर्ग दूत तो जानता था, मगर लगता है कि यह स्त्री नही जानती थी। 'तुम कहाँ से आ रहे हो?' - परमेश्वर यह प्रश्न पूछना चाह रहे हैं। बीते साल के दौरान, तुम्हारी क्या आध्यात्मिक उन्नति रही है। शुरूआत कहाँ हुई? तुम अपने पद चिन्हों पर ध्यान दो। अनन्तकाल की रेत पर हम अपने पद चिन्हों को छोड़े जा रहे है। उनमें से कुछ अर्थ हीन है, कुछ बेवकूफी से भरे है। और कुछ पीछे हटने वाले विश्वास हीन पद चिन्ह है। पिछले साल के पद चिन्हों को पीछे मुड़कर देखें।

हम कहा पर चलें? - क्या परमेश्वर के उन्नत स्थानों पर? यह स्त्री अब्राम के घर से जंगल आ पहुँची। कई लोग इसी तरह चुनाव करते हैं। परमेश्वर की सन्निधि, शान्ति और आनन्द से, दुर्गति और स्वार्थी-इच्छा की तरफ भागते हैं। हम किधर से आये है, यह प्रश्न अपने आप से पूछना बहुत जरूरी है। तुम्हारा पथ, ऊपर या नीचे की तरफ होगा। तुम निश्चल नही रह सकते।

पर्वत पर, एक बस मुश्किल से ऊपर चढ़ रही है, और एक नीचे आ रही है। क्या तुम अल्प-प्रतिरोध वाले रास्ते को अपना रहे हो? जब मुझे ऊपर चढ़ना हो तो, प्रतिरोध का सामना करना ही पड़ेगा। तुम में से कुछ लोग अल्प-विरोध वाले पथ पर चल पड़े हो। यह पथ पीछे हटनेवाले का पथ है - जो नीचे जाता है। तुम्हें परमेश्वर से यह कहना होगा कि तुम किधर से आये हो। तुम बहुत ही आराम पसन्द व्यक्ति बन गये हो। और कहते हो, 'ऐसा करने में क्या हर्ज है, सभी तो ऐसे कर रहें है?' तब तुम एक मन फिराये आदमी नही हो।

दूसरा प्रश्न: 'तुम कहाँ जा रही हो?' हमें अपने आप से भी यह प्रश्न पूछना है। तुम परमेश्वर की सन्निधि से भाग रहे हो, मगर किधर जा रहे हो? अब्राम के घर की सुरक्षा को छोड़ कर, एक जंगल में पहुँच गये हो। तुम किधर जा रहे हो? हम परमेश्वर के नजदीक जा रहे है या उनसे दूर? क्या मैं पवित्रता के पथ पर चल रहा हूँ? भजन संहिता की पुस्तक में एक विनम्र पुकार है। भजन संहिता (१०२:२४), 'मैंने कहा, 'हे मेरे परमेश्वर, मुझे अल्पायु में ही न उठाये, तेरे वर्ष तो पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहते है।' यह कितनी विनम्र माँग है। मगर यहाँ, जब संगीतकार दीर्घायु की माँग कर रहा है तो उस के पीछे एक प्रबल उद्देश्य और प्रयोजन है। भजन संहिता (७१:१८), 'मेरे बुढ़ापे में भी, जब मेरे बाल पक जायें, हे परमेश्वर, मुझे त्याग न दे, जब तक मैं इस पीढ़ी से तेरे सामर्थ्य का, और सब भावी पीढ़ियों से तेरी शक्ति का वर्णन न कर दूँ।' इधर संगीतकार के पास जीने का मक़सद है। 'मैं इस पीढ़ी को तेरा सामर्थ्य दिखाना चहता हूँ।' और दूसरा उद्देश्य यह था कि आने वाली पीढ़ियों को परमेश्वर की शक्ति दिखाना है। परमेश्वर ने, भजन संहिता ७१ में, दाऊद की इस प्रार्थना को जरूर सफल किया है। आज भी, दाऊद के बारे में और परमेश्वर के लिए उनके करनामे, हम याद करते हैं। उनका ५१ वां भजन, और उसमें उनका पश्चात्ताप, कई लोगों के लिए एक ज्योति है। कुछ माँ-बाप कहते है, 'हमारे बच्चे

पृष्ठ २ पर..हमारी दौड़..

पृष्ठ १ से..सच्ची प्रार्थना...

कारण, पथभ्रष्ट करने वाले नबी थे। हनन्याह ने शान्ति की झूठी नबूवत की। जब उनकी अपनी ही जाति का विनाश हुआ, तब यिर्मयाह रोया था। और एक सच्चे नबी को कैद किया गया। और देश में झूठी नबूवत को अपनाया गया। जब यरूशलेम की तबाही की नबूवत सच हुई थी, यिर्मयाह ने विलाप किया था। राजा और राज पुत्र इतने घमंडी थे कि वे किसी भी सच्चाई को अपने निकट आने नही देते थे। घमंड, हमें अपनी गलतियों को नहीं मानने देता है। ऐसा घमंड बहुत भयानक है। मन फिराते समय यह घमंड हमें छोड़ना शुरू करता है। मगर, फिर भी पूरी तरह से नहीं छोड़ता। अक्सर फिर दिखाई पड़ता है। जब यह गर्व पूरी तरह से हमें छोड़ जाए तो, अनुग्रह बहुतायत से कार्य करना आरंभ करता है।

प्रार्थना के सच्चे अभ्यास, बहुत ही प्रभावपूर्ण हैं। वह तुम्हारे अस्तित्व के हर कण-कण में फैल जाते है। एक अच्छी प्रार्थना सुनना, एक बहुत बड़ी आशिष है। पाप की वजह से, हमारे मन खराब हो गये है। इसलिए हमारे मन, परमेश्वर के मन से विपरीत हैं। एज्रा (६:१०), 'कि वे स्वर्ग के परमेश्वर के लिए ग्रहणयोग्य बलिदान चढ़ा सकें और राजा तथा उसकी सन्तान की दीर्घायु के लिए प्रार्थना किया करें।' फ़िरौन ने भी मूसा से, उनको आशीर्वाद देने की माँग की। यह कैसे संभव था? आज्ञा-पालन के बिना आशिष पाना नामुम्किन है। परमेश्वर चाहते है कि काश हम उनके वचन का पालन कर पायें। दूसरों को बचाने के लिए, प्रार्थना की गहराई तक गोता लगाना, हमें सीख लेना चाहिए।

परमेश्वर हमारे साथ बहुत भले रहे हैं। हम से प्यार करें और हमें आशिष दे - यही परमेश्वर का स्वभाव है। उनके वचन का उलंघन करने से हम खतरे में पड़ जाते है। विलापगीत (५:७), 'हमारे पूर्वजों ने पाप किया, और मर मिटे; उनके अधर्म का भार हमें ही उठाना पड़ा है।' हम प्रार्थना करें। प्रार्थना कभी व्यर्थ नही जाती। गलतियों को मान लेना बहुत जरूरी है। इसलिए परमेश्वर की इस सच्चाई के बारे में, हम अपने लोगों को, प्यार से बताएँ। परमेश्वर के सामने, अपने प्रभाव हीन और फल रहित जीवन, जो हम जी रहें है, उसे हम कबूल करें।

जिसका मुँह और हृदय पूर्ण रूप से, परमेश्वर के हृदय के साथ ताल-मेल में हो, वही सच्चा नबी है। परमेश्वर चाहते हैं कि हम मसीह के समान, उनके साथ एक मन रहें।

- स्वर्गीय श्रीमान एन. दानिय्येल

पृष्ठ १ से ...हमारी दौड़...

बहुत छोटे है, इसलिए हमारा जिन्दा रहना जरूरी है।' यह एक न्याय पूर्ण कारण है। मगर हम उससे भी ऊपर उठने की कोशिश करें।

उत्पत्ति (१६:१३) यह विधर्मी स्त्री, जो एक मूर्ति पूजा से भरे देश से आयी थी, परमेश्वर को एक नाम दिया। 'तू देखने वाले ईश्वर' वह घमण्डी स्त्री थी। और वह समर्पण करके आज्ञाकारी बनना नही चाहती थी। एक मात्र, सच्चे परमेश्वर का नाम कभी नही बदलता। परमेश्वर हमारे घमण्ड को देखते है। और यह भी कि किस तरह हम अपने आप को दीन नही कर पाते। शैतान भी हमें देख रहा है। जब हमारे हृदय में गर्व है, और परमेश्वर के आधीन होने की इच्छा ना हो तो, शैतान हमें तकने की इंतजार में है। आज्ञा पालन के बजाय, लम्बी प्रार्थना करने से कोई फायदा नही। शैतान तुझे, गड़बड़ी में डालने की इंतजार में है। यह बेवकूफ स्त्री भागने की कोशिश कर रही थी। मगर परमेश्वर ने, उसे चेतावनी देने के लिए एक स्वर्गदूत को भेजा, 'सारै के पास लौट जा और अपने आप को उसके आधीन कर दे।' तब उस ने कहा, 'हे परमेश्वर, तू देखने वाला ईश्वर है।'

मुझे बहुत दुख होता है कि लोगों को पहचानने में मैं गलती करता हूँ। और उनके परख नही पता। साधारणतय लोग मुझे धोखा नही देते। मगर कुछ लोग हैं जो मुझ से सच्चाई छिपाते है। यह, मेरे लिए बहुत गंभीर बात है।

परमेश्वर, जो देखते है - तुम उनसे व्यवहार कर रहे हो। परमेश्वर से खेलने की कोशिश मत करो। अगर तुम घमंड का पीछा करके विद्रोह पर उतर आये हो तो, परमेश्वर तुम से निपटेंगे। परमेश्वर की इच्छा को हम लाँघ नही सकते। हमारा परमेश्वर देखनेवाला परमेश्वर है। भय से कांपते हुये, पश्चात्ताप के साथ हम आगे बढ़ें।

- जोशुआ दानिय्येल

परमेश्वर द्वारा सामर्थ्य

हेरबर्ट जैकसन ने, गुरुकुल की एक मिशन कक्षा में यह कहा कि किस तरह उन्हें एक कार सौंपी गयी। वे एक नये मिशनरी के तौर पर आये थे। और उन्हें एक गाड़ी दी गयी, जो धक्का दिये बिना चालू नही होती थी।

अपनी इस समस्या पर सोचने के बाद, उन्होंने एक योजना तैयार की। वे अपने घर के नजदीक एक स्कूल में गये। कुछ बच्चों को कक्षा से बाहर ले जाने की अनुमति ली। और ये बच्चे उनकी कार को धक्का देते। चक्कर लगाते समय, या तो वे अपनी गाड़ी को पहाड़ी पर रोकते, नही तो अपनी गाड़ी को चालू ही रखते। दो साल तक, वह अपने इस देशी तरीके को आजमाते रहे।

जैकसन परिवार को, बीमारी के कारण, उस स्थान को छोड़कर जाना पड़ा। और उस स्थान पर नये मिशनरी आये। जब जैकसन बड़े गर्व से, उस कार को चालू करने की व्यवस्था को विस्तार से समझा रहे थे, उस नये आदमी ने बोनट के अंदर जाँच शुरू की। उनका विवरण समाप्त होने से पहले ही, उस नये मिशनरी ने उनकी बात टोककर कहा, 'क्यों डॉक्टर जैकसन, मुझे यकीन है कि यह ढीली तार ही एक मात्र गड़बडी है।'

ढीली तार को एक बार कस कर, वे कार में बैठ गये। एक बार बटन दबाया तो, जैकसन को आश्चर्य चकित करते, इंजन एक दम से चालू हुआ।

For More Details Please contact on any of the following Bookstalls

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

दो सालों तक यह व्यर्थ प्रयास ही एक दिनचर्या बन गई थी। सामर्थ्य तो हमेशा से वहीं पर था। केवल एक ढीले जोड़ के कारण, जैकसन इस सामर्थ्य को काम में लाने से वंचित रहें। इफिसियों (१:१९-२०) का, श्रीमान जे.बि. फिलिप ने इस तरह पदन्वय किया, 'परमेश्वर पर विश्वास करने वाले, हम लोगों के पास उपलब्ध सामर्थ्य कितना महान है।' परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध, जब हम मजबूत बनायेंगे तो, उनकी जीवन शक्ति और सामर्थ्य हम में बहेगी।

- चुनीहुई

परमेश्वर की सहनशीलता

डेन्निसस मिलर लिखते हैं -

हमारा छोटा लड़का, कुछ फर्लांग की दूरी पर अपने दोस्त के यहाँ खेलने जाता था। उसे कुछ जिम्मेवारी सिखाने की इच्छा से और फिर माँ-बाप होने के नाते चिंतित, हम चाहते थे कि वहाँ पहुँचते ही, वह घर पर फोन करे। मगर फिर भी, जब उसका अपनी क्षमता पर विश्वास बढ़ने लगा कि बिना कुछ अनर्थ घिटित हुए वह पहुँच सकता है, वह फोन करना भूलने लगा।

जब पहली बार वह भूल गया तो, यह निश्चित करने के लिए कि वह पहुँच गया है, मैंने फोन किया। हम ने उससे कहा कि, अगर दुबारा ऐसा हुआ तो उसे बिना खेले घर लौटना पड़ेगा। मगर कुछ दिनों के बाद, टेलीफोन की घंटी फिर नही बजी। और मैं यह जानता था कि उसे सीखना हो, तो उसे दण्ड देना जरूरी होगा। मगर मैं उसे दण्ड नही देना चहता था। पिता से सम्पर्क ना रखने के कारण उसका एक अच्छा समय खराब करना पड़ेगा - इस बात पर खेद करते हुए, मैं टेलिफोन के पास गया।

डायल करते समय, मैंने विवेक के लिए प्रार्थना की। 'जैसे मैं तुमसे व्यवहार करता हूँ, तुम उसके साथ भी वैसा ही सुलूक करो', लगा कि प्रभु मुझ से कह रहे है। इसलिए, फोन की घंटी एक बार बजते ही, मैंने फोन रख दिया। कुछ क्षणों के बाद फोन की घंटी बजी। और वह मेरा बेटा था। 'पापा मैं इधर हूँ!'

'फोन करने में इतनी देरी क्यों हुई?' मैंने पूछा।

'हम खेलने लगे थे और मैं भूल गया। मगर पापा, फोन एक बार बजते सुनाई दिया तो, मुझे याद आया।'

'मुझे अच्छा लगा कि तुम्हें याद आया', मैंने कहा। 'अब मजे से खेलो।'

जब हम सीमा से बाहर आ जाते है तो परमेश्वर हमें दण्ड देने से पहले प्रतीक्षा करते है - इस तरह, परमेश्वर के बारे में हम कितनी बार सोचते है? मुझे ताजुब है कि वे कितने समय एक बार घंटी बजाते हैं, यह आशा करते कि हम घर फोन करेंगे।

मृत्युंजय ख्रिस्त

मसीह के लिए अपने परिवार को कैसे जीतें

परमेश्वर, एक विश्वासी के पूरे परिवार को बचाने के लिए इच्छुक है। पुराना और नया नियम, दोनों में यह सच्चाई स्पंदित है। परमेश्वर ने नूह से कहा, 'तू अपने समस्त घराने सहित जहाज में प्रवेश कर, क्यों कि इस पीढ़ी में तू ही मुझे धर्मी दिखाई देता है।' (उत्पत्ति ७:१)

फसह की रात के पहले, परमेश्वर ने यह नियम रखा 'एक घराने के लिए एक मेमना' (निर्गमन १२:३) इब्रानियों ११ - परमेश्वर के इस विश्वास - कक्ष की सूची में राहाब है। यरीहो के पतन के समय, राहाब ने अपने पूरे परिवार की सुरक्षा के लिए विश्वास किया था। उसकी अर्जी स्वीकार की गयी। वह और उसका परिवार सुरक्षित रहे। (यहोशू २:१२-२१, ६:२५)

पौलुस और सीलास ने फिलिप्पी जेल के दारोगा से कहा, 'प्रभु यीशु पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।' कूरनेलियुस से वादा किया गया कि- 'शमौन परतस तुझे ऐसी बातें बताएगा जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा।' (प्रेरितो के काम ११:१४)

नीतिवचन (११:२१), पवित्र बाइबल में ऐसे कई वचन हैं, जो आश्वासन देते हैं कि परमेश्वर परिवार के घर एक सदस्य को सुरक्षा के जहाज में लाने के लिए उत्सुक हैं। प्रेरित पतरस हमें यह याद दिला रहे है कि प्रभु 'यह नही चाहता कि कोई नाश हो, परन्तु यह कि सब पश्चात्ताप करें।' वह चाहते है कि तुम्हारा साथी, तुम्हारे माँ-बाप, तुम्हारे बच्चे और घर के बाकी सारे सदस्यों का उद्धार करें। और वह तुम्हारे जरिये, यह अद्‌भुत कार्य करना चाह रहे हैं।

'मेरे पूरे परिवार का उद्धार?'

'वह असंभव लगता है।' मगर यीशु कहते है, परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है।' (मरकुस १०:२७) अगर परमेश्वर तुम्हारे साथ हो, और तुम परमेश्वर के साथ हों, तो कुछ भी असम्भव नही! जब मार्था को यह समझने में दिक्कत हुई कि प्रभु कैसे उसके भाई लाज़र को दुबारा जीवित करेंगे, तब यीशु ने कहा '.... यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा देखेगी।' यूहन्ना (११:४०)

सदियों से आध्यात्मिक पुरुष और औरतों ने, मसीह के लिए अपने परिवारों की माँग की। और परमेश्वर ने उनके विश्वास का आदर किया। सैल्वेशॅन आर्मी की कैथरीन बूथ ने यह पुकारकर कहा, 'हे प्रभु, मैं अपने परिवार के बगैर, तेरे सामने खड़े नही रहना चाहूंगी।' उनके पूरे परिवार ने मसीह को जाना और विश्वास सहित उनकी सेवा की।

पति को जीता जा सकता है।

कालिफोर्निया की श्रीमती जे., जानती है कि मसीह के लिए पति को जीता जा सकता है। उस में चौबीस सालों की प्रार्थना, परीक्षा और एक नियमित मसीही जीवन लगा। उनका पति अब एक खुशहाल मसीही व्यापारी है। उनका लिखा हुआ यह पत्र है।

मेरे पति को जीतने में मुझे २४ साल लगे। वह एक लम्बा, काँटेदार रास्ता था जिस पर मैं चली। मगर मैंने अपनी प्रार्थना कभी नही छोड़ी। यहाँ तक की जब सब कुछ अन्धकारमय था, मैं यह सोचती, 'भले ही मेरे पति कभी न मन फिराये, तब भी, परमेश्वर के अनुग्रह से मैं अपने भाग को पूरा करूँगी।

हर दिन मैं यीशु को प्रसन्न करने की कोशिश करती। कई बार मुझे कठिन स्थानों से गुजरना पड़ा। कई बार मैं मृत्यु के द्वार पर थी। मेरे बच्चे बार बार गंभीर बीमारियों से पीड़ित होते। मुझे वो दिन भी याद है जब उस उदासी के दौरान, हमारे पास खाना खरीदने के लिए दस पैसे भी नही रहते थे। बिजली कंपनी वालों ने बिजली भी काट दी। मैं अपने हाथों से ही चार छोटे बच्चों के कपड़ों की धुलाई करती। जब कभी कुछ रूपये मिलते, तो मेरे पति सब दारू पीने में खर्च कर देते। निराशा में, मैं परमेश्वर से प्रार्थना करती। और उनसे, अपने नन्हे बच्चों को आश्चर्य रीति से खाना देने की माँग करती। और परमेश्वर ने मेरी सुनी। हम कभी भूखे नही रहे। अवश्य ही, मेरे बच्चों को यह पता नही चलता कि उनकी माँ यह खाना कहाँ से लायी। प्रभु और मेरे बीच यह एक रहस्य था।

मेरा पति एक सरफिरा स्वीडनदेशी आदमी है। वह जानते थे कि उन्हें एक मसीही बनना चाहिए। उन्होंने मुझ से कहा था कि जब मैं ने मन फिराया था, तब किस तरह से मसीह ने मेरे जीवन को बदला, इस के बारे में वह जानते है। और वे यह भी मानते थे कि किस तरह परमेश्वर ने हमारे परिवार के लिए आश्चर्यकर्म किये। मगर पूरी तरह से एक मसीही पिता बनने की कीमत चुकाने के लिए वह तैयार नही थे।

ऐसा लगता कि वे गोल घूम रहे है। कुछ समय वह धर्म के बारे मे बाते करना ही नही चाहते, फिर दूसरे समय यह लगता की वे सच्चाई के भूखे हैं। उस समय मैं मसीह के बारे में उनको गवाही देती। दूसरे समय, जब मैं परमेश्वर के बारे में उनसे बाते नही कर पाती तो, उस समय, मैं परमेश्वर से बाते करती। उनके बारे मे प्रार्थना करने से वह मुझे रोक नही पाये ।

जल्दी ही मुझे पता चला कि मेरे पति मेरे और शादी की वाचा की ओर बेवफा है। अवश्य ही उन्होंने यह बात मुझ से छिपाने की कोशिश की। मगर जब मैं प्रार्थना कर रही थी, ऐसा लग रहा था कि परमेश्वर मुझे दिखा रहे है कि मेरा पति कहाँ है। और किस के साथ उनका सम्बन्ध है। मेरा हृदय टूट गया। मेरे पति ने यह सब मानने से इनकार किया। मगर मुझे बाद मे पता

पृष्ठ ४ पर..मसीह के लिए...

सत्य की परख!

'यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है, मूर्ख ही बुद्धि तथा शिक्षा को तुच्छ समझते हैं। (नीतिवचन १:७)'

पृष्ठ ३ से..मसीह के लिए...

चला कि परमेश्वर ने मुझे यह दुखद सच्चाई पहले से ही मुझ पर प्रकट की। मेरा पति बेवफा था।

इस अन्धकारमय समय के दौरान, परमेश्वर ने, मुझे अपने मसीही स्वभाव को बनाये रखने की क्षमता दी। मैंने उन्हें उत्तेजित करने की कोशिश कभी नही की। जब वे बदमिज़ाज रहते और कटाक्ष करते, मैं तब भी चुप रहती। प्रभु में मुझे हर दिन एक नया धीरज, सहन शक्ति और उनसे नजदीकी मिलती। जब मैं नयी-नयी परमेश्वर में आयी तो, इन में से कोई भी लक्षण मुझ में नही थे। मुझे अनुमान है कि मन फिराने से पहले, मैं जिद्दी, चिड़-चिड़ी और धृष्ट थी। मगर तब, मैंने यीशु को अपने जीवन पर काबू पाने दिया। और उन्होंने मुझे पूर्ण रूपसे बदल दिया। वास्तव में, दूसरे मसीहियों ने मुझसे कहा कि मैं 'बहुत ही शान्ति प्रिय' हूँ और मुझे अपने आपको बचाकर रखना चाहिए। मगर परमेश्वर ने मुझसे कहा कि मैं शान्त रहूँ और उन्हें मेरा बचाव करने दूं।

सन् १९५० में, हमारा परिवार और कारोबार दोनों ही संकट में थे। बहकावे में, मैं अपने पति को यह कहने वाली थी कि अब से वह अपने लिए खुद प्रार्थना करे। (मैं जानती हूँ कि वे मेरी प्रार्थना की वजह से कुछ हद तक अपने आप को सुरक्षित समझ रहे थे।)

मगर तब, जैसे किसी ने कहा, 'पौ फटने से पहले का घंटा रात का सबसे अंधकारमय घंटा होता है।'

२४ सालों के आँसू, सिर दर्द, प्रार्थना और दृढ़ता के बाद, एक सुसमाचार प्रचार सभा में, मैंने अपनी पति को वेदी के सामने जाते देखा। मेरे पति, आखिरकार, परमेश्वर के पास, घर लौट आये। मैं खुशी से फूली न समायी।

आज, कई सालों बाद भी मेरे पति प्रभु की सेवा कर रहे है। हमारा एक मसीही परिवार है। हम साथ-साथ चर्च जाते हैं और सफलता से करोबार को चला रहें है।

अगर परमेश्वर हमारे घर में एक आश्चर्य कार्य कर पाये तो, किसी के घर में भी कर सकते है। मैं जानती हूँ कि परमेश्वर की सहायता से एक औरत अपने पति को मसीह के लिए जीत सक्ती है।

पत्नी को जीता जा सकता है।

कुछ सालों पहले पूर्वी राज्य के एक प्रमुख उत्पादक मसीही बने थे। उन्होंने यह निर्णय किया कि वे अपनी भूरे-बालों वाली सुन्दर पत्नी को भी प्रभु के लिए जीतेंगे।

वह आसान नही था। 'चर्च! चर्च! चर्च क्या आप किसी और जगह नही जा सकते?' 'लगता है कि परमेश्वर के सिवाय, किसी और के बारे में, आज कल आप सोचते ही नही हो' इस तरह वह किचकिच करती।

उसने, उनको छोड़ कर जाने की धमकी दी। मगर उन्होंने यह सलाह दी, 'हम कॉलिफोर्निया में कुछ दिन छुट्टी मनायेंगे। मुझे यकीन है कि हम अपनी समस्याओं को सुलझा पायेंगे।'

माहौल बदलने से भी कुछ फायदा नज़र नही आया। 'आप को जो विश्वास करना है, करो! मगर व्यक्तिगत रूप से मुझे विश्वास नही कि कोई परमेश्वर है!' वह बेधड़क बोली। अपनी पत्नी के व्यवहार से निरुत्साह, उस उत्पादक ने पूरे मन से प्रार्थना की। उन्होंने यह माँगा कि पवित्र आत्मा उनकी पत्नी को अपनी गलतियों का एहसास कराये। और उसे प्रभु के नजदीक लाये।

जल्दी ही उनकी प्रार्थना का जवाब मिला। एक रात जब वे कालिफोर्निया के तट पर जा रहे थे, उनकी पत्नी ने नजदीक आकर उनके कानों में यह कहा 'प्रिय, बिना मतलब, परमेश्वर के बारे में, मैंने अनाप-शनाप कह दिया, मगर मुझे वास्तव में उन पर विश्वास है। मैं चाहती हूँ कि वे मेरी जिन्दगी में भी आयें।'

'परमेश्वर को धन्यवाद!' पति मुस्कराया। 'उन्होंने मेरी प्रार्थना का उत्तर दिया।'

उस रात करीब ग्यारह बजे थे, उन्होंने एक छोटी चर्च को खुला पाया। वे दोनों अन्दर गए। वेदी के सामने गये। और जल्दी ही पत्नी के हृदय में भी उद्धार का आनन्द भर गया।

आज, यह मसीही उत्पादक, जो अब पाँच बच्चों के पिता है, हमें यह कहते हैं, 'हाँ, मसीह के लिए एक पति, अपनी पत्नी को जीत सकता है। परमेश्वर आज भी प्रार्थना का उत्तर देते है।'

तुम माता-पिता को जीत सकते हो।

एक छोटी लड़की ने अपने नास्तिक पिता से विनती की, 'सिर्फ एक बार मेरे साथ चर्च चलिये। पिताजी, मैं आप से बहुत प्यार करती हूँ। आप, आयेंगे ना?'

अंत में उन्होंने कहा, 'ठीक है, प्रिय, मगर सिर्फ एक बार।'

उनकी वह छोटी सी लड़की खुशी से भर गयी। यह यीशु से प्यार करती थी। अब उसकी यह आशा थी कि उसके पिताजी एक संदेश सुनेंगे। इससे वे भी प्रभु से प्यार करने लगेंगे।

मगर पादरी ने पुराना नियम से एक बड़ी लम्बी पंक्ति पढ़कर सुनाई। वह कई लम्बे-लम्बे नाम से भरी पंक्ति थी। और करीब-करीब हर एक वचन में कहा गया, 'फलाना, फलाना ने फलाने को उत्पन्न किया और तब वह मर गया ... तब वह मर गया ... तब वह मर गया।' वह लड़की बहुत ही निराश हुई। 'ओह अब पिताजी दुबारा चर्च कभी नही आना चाहेंगे।' वह अपनी माँ के पास जाकर रोई।

मगर वह गलत थी। परमेश्वर ने, उस वाक्यांश का - 'तब वह मर गया' उसके पिताजी को दोष सिद्ध कराने और मन फिराने के लिए इस्तेमाल किया। उन्होंने बाद में गवाही दी कि उसके बाद, कई दिनों तक ये शब्द लगातार याद आते रहे। उन्हें यह आभास हुआ कि तैयारी किये बिना ही वे किसी दिन मर जायेंगें। आखिर उन्होंने परमेश्वर से अपनी शान्ति बनाने का निर्णय लिया। उनकी छोटी लड़की उन्हें मसीह की ओर ले चली। लिड़िया एच. सिगोर्नि ने कहा: 'हम अपने बच्चों को शिक्षित करने के बारे में कहते रहते है। मगर क्या हम जानते है कि हमारे बच्चे हमें भी पढ़ाते है?' हाँ, बच्चे, मसीह के लिए, अपने माँ-बाप को जीत सकते है।

- चुनीहुई

सोना एक बुरा जीवन-सुरक्षक

आज कितने लोग सोने की पूजा कर रहें है। जहाँ युद्ध के मारे हज़ारों लोग हैं तो सोने के मारे लाखों लोग है। सदियों से इसका इतिहास, गुलामी और अत्याचार से भरा इतिहास है। अब इस समय, इसका कितना बड़ा साम्राजय है। हो सके, तो लालच की आत्मा, इस भूगोल को ही सोने में बदल देने की कोशिश करता है।

रोम में कापिटोलि पहाड़ पर स्थित एक किले के राज्यपाल की पुत्री टॉर्पिया थी। हमला किये हुए साबीन सिपाहियों के हाथों में सोने की कड़ियों से वह बहुत आकर्षित हो गयी थी। अगर वे अपने बायें हाथों में जो पहने हैं दे दें तो, वह सेना को किले में प्रवेश करने देने के लिए राजी थी। दोनों राजीमंद हुए। और साबीन सेना ने अपना वादा निभाया। टॉवियस ने, जो सेनापति था, सब से पहले अपने हाथ के कड़े और ढाल उसे सौंप दी। और एक के बाद एक सिपाही, टापिया पर फेंकते गये। और उस लुटाऊ खजाने के भारी वज़न से दब कर वह मर गयी। इस तरह सोने का भारी वज़न, कई लोगों को नीचे दबा रहा है।

स्काटलैण्ड का एक चिकित्सक डॉ. अर्नाठ, सोने के बारे में एक कहानी कहा करते थे, कि मूल्यहीन सोने के लिए किस तरह कई लोग परिश्रम करते हैं।

एक जहाज जो प्रवासियों के एक दल को ले जा रहा था, रास्ते से भटक कर एक भीषण द्वीप पर नाश हो गया। उधर से बच निकलने का कोई रास्ता नही था। और वह जगह किसी की पहुँच से बहुत दूर थी। मगर उनके पास आहार का अच्छा भंडार था। चारों तरफ सागर था, मगर उनके पास भरपूर दाना, अच्छी जमीन और धूप थी इसलिए कोई खतरा नही था। मगर कोई योजना बनाने से पहले, एक अन्वेषण दल ने सोने के खान की खोज की। और पूरा दल उधर खुदाई करने लग गया। वे दिन-ब-दिन, महीने भर महीने परिश्रम करते गये। अब उनके पास सोने का बहुत बड़ा ढेर लग गया। वसन्त काल बीत गयी।

मगर खेत को तैयार नही किया गया। और अनाज का एक दाना भी भूमि मे नही डाला गया। गरमी आयी और उनका खज़ाना तो बढता गया। मगर आहार का भंडार घटता गया। उस समय, वे अपने सोने के ढेर को निकम्मा पाये। अब अकाल स्पष्ट दिखाई देने लगा। अब वे जल्दी से जंगल मे गये। पेड़ों को काटा, जड़ों को उखाड़, मिट्टी को जोत कर दाने बोये। मगर बहुत देर हो चुकी थी। सर्दी आई और उनके बीज जमीन में ही सड़ गये। उनके खजाने के बीच, भूखे वे सब मर गये।

पृथ्वी एक द्वीप की तरह है। और अनन्तकाल उस के चारों ओर एक महासागर की तरह है। हम उस द्वीप के तट पर प्रवासी की तरह हैं। जीवित-बीज प्रभु का वचन है। मगर हम सोने के खानों से आकर्षित है। हम उधर ही अपने वसन्त और गरमी बिता देते है: अपनी परिश्रम में सर्दी हमें घेर लेती है। और हम जीवन-आहार से वंचित रह जाते हैं। हम गुमराह है। हम जो मसीही हैं, उस घर को अमूल्य समझें जिसमें खज़ाना है जो कोई चुरा नही पायेगा! - चुनीहुई।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।